Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

पर्यटनः भाषा और साहित्यः प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण मध्यकालीन धरोहर मांडू के विशेष संदर्भ में

संगीता राणा*

मध्यप्रदेश की विरासत में माण्डू की धरोहर का अपना एक स्थान है। वर्षाऋतु हो या सर्दी पर्यटक वहां के बने स्मारकों और प्राकृतिक सौंदर्य को देखने के लिये अपने आप चले आते हैं। माण्डू को बाजबहादुर एवं रानी रूपमती के प्रणय स्थली के रूप मे भी जाना जाता है।

लोग कहते है कि बाज बहादुर द्वारा बनाये गए रूपमती महल से रानी रूपमती माँ नर्मदा का दर्शन करती थी। रूपमती महल को देखने दूर–दूर से लोग यहाँ आते हैं। इसके अतिरिक्त यहां के स्मारकों में होशंगशाह का मकबरा, जहाज महल, बाज बहादुर पैलेस, हिंडोलामहल, जामा मस्जिद अन्य कई मध्यकालीन स्मारक हैं।

माण्डू इन्दौर जिले से लगभग 90 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। इसका प्राचीन नाम माण्डव दुर्ग या माण्डव गढ़ मिलता हैं। तालानपुर के जैन तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा के पादपीठ पर संस्कृत भाषा के अभिलेख से पता चलता है कि मांडव दुर्ग एक व्यापारी के द्वारा बनाया गया हैं जिसकी तिथि विक्रम संवत् 612 (555 ई. सन्) मिलती हैं।

राजा जयवर्मन के अभिलेख से प्राप्त जानकारी पर सन् 1256 ई. से सन् 1261 तक माण्डू में जयवर्मन ने शासन किया। यहां 1305 ई. तक हिन्दू राजाओं का शासन था। उस समय महलक देव माण्डू में शासन करता था जिसके प्रमाण वहां के दूर्ग की दीवारों से मिले जैन और हिन्दू मंदिरो के अवशेष में देखे जा सकते हैं। बाद में इस पर मुस्लिम शासकों (मुगल राजाओं) ने शासन किया।

माण्डू को बाज बहादुर एवं रूपमती की प्रणय स्थली के रूप में भी जाना जाता है। लोग कहते हैं कि बाज बहादुर द्वारा बनाये गये रूपमती महल से रानी रूपमती माँ नर्मदा का दर्शन करती थी। रूपमती महल को देखने दूर–दूर से लोग यहां आते हैं इसके अतिरिक्त यहां के स्मारकों में होशंगशाह का मकबरा, जहाज महल, बाज बहादुर पैलेस, हिंडोला महल, जामा मस्जिद, अशर्फी महल, दिल्ली दरवाजा, तवेली महल, छप्पन महल, रेवा कुण्ड एवं अन्य कई मध्यकालीन स्मारक हैं।

यहाँ छप्पन महल और तवेली महल में स्थानीय पुरावस्तुओं की जानकारी के लिये संग्रहालय बनाया गया हैं। पर्यटकों की सुविधाओं के लिये पर्यटन विकास निगम द्वारा मालवा रीट्रीट तथा मालवा रिसोर्ट भी यहां उपलब्ध हैं। डायनासोर के अंडे भी यहां काफी संख्या में मिले हैं, जिसे एक छोटे से संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया हैं। अधिकांश महत्वूपर्ण स्मारक भारती पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन संरक्षित स्मारक हैं।

''माण्डू 45 कि.मी. की परिधि में फैला हुआ हैं। इसके रक्षा प्राचीर 12 दरवाजों में दिल्ली दरवाजा प्रवेश द्वार के रूप में माना जाता हैं।

*शोधार्थी, पीएच.डी., हिन्दी–विभाग, माता जीजाबाई शा.स्ना.कन्या, महा. इंदौर, म.प्र।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

रामपोल दरवाजा, आलमगीर दरवाजा, तारापूर दरवाजा, जहांगीर दरवाजा आदि प्रमुख दरवाजे हैं। दिल्ली दरवाजे से होकर जाने वाले रास्ते में प्राचीर एव बुर्जयुक्त श्रृँखलाबद्ध द्वार बने हैं। इन्ही प्रमुख दरवाजो से माण्डू जाने वाली वर्तमान सड़क गुजरती हैं।''

प्रमुख स्मारकों में 'जहाज महल' राजप्रसाद के रूप में माना जाता हैं। यह महल 120 मीटर लम्बा कृत्रिम झीलों के मध्य (मुंज तालाब और कापूर तालाब) बनाया गया हैं। खुला मण्डप, छज्जा, खुली छत, द्वारा सुसज्जित जहाजमहल प्रस्तर निर्मित एक अद्भुत संरचना हैं।

'अशर्फी महल' वास्तविक रूप से एक मदरसे के रूप में बनवया गया था, लेकिन बाद में इसको मुहम्मद शाह के मकबरे के रूप विस्तृत किया गया। अब इस मकबरे के अवशेष मात्र ही सुरक्षित हैं।

'बाज बहादुर पैलेस' प्राकृतिक रूप से सुंदर पहाड़ी की ढलान पर स्थित हैं। मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही दोनों तरफ सुरक्षा हेतु रक्षकों के कक्ष बने हुए हैं जिनकी छत गज पृष्ठाकार हैं। मुख्य महल में विशाल खुला प्रांगण, सभागार एवं चारों ओर कक्ष बने हैं। इनके बीच एक सुंदर तालाब हैं। इसके बाद स्तम्भों की पंक्ति के मध्य में एक सुंदर अष्ठकोणीय कक्ष हैं जिसमें मेहराब युक्त प्रवेश द्वार हैं, जिससे सुंदर बगीचा दिखाई देता हैं। इसी से सटा एक विशाल सभागार भी हैं।

'होशंगशाह का मकबरा' उत्कृष्ट अफगान वास्तुशैली में निर्मित भारत का संगमरमर निर्मित सबसे प्राचीन स्मारक हैं। वृहद गुम्बद, संगमरमर की बनी उत्कृष्ट जालियां मुख्य मंडप तथा मुख्य गुंबज के चारों कोनो पर एक एक लघु मिनार बनी हैं। यह स्मारक असाधारण विशेषता प्रदर्शित करती हैं।

'हिंडोला महल', वस्तुतः एक सभागार है, जिसका निर्माण गयासुद्दीन के शासन काल में हुआ था। हिंडोला महल झूला राजप्रसाद भी कहा जाता हैं। इस स्मारक के पास ही चम्पा बावड़ी, दिलावर खाँ की मस्जिद, नाहर झरोखा, तवेली महल, दो बड़ी बावड़ी, गदाशाह की दुकान तथा घर दर्शनीय स्थल हैं। तवेली महल के छत से चारों ओर स्थित तालाब का सुंदर दृश्य दिखाई देता हैं। वर्तमान मे यहां भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संग्रहालय बनाया गया हैं।

पहाड़ी के शिखर पर बाज बहादुर राजप्रसाद के दक्षिण में एक मंडप हैं, जो रानी रूपमती के नाम से जाना जाता हैं। मंडप का निर्माण विभिन्न कालों में दो तीन चरणों में किया गया। मूल संरचना के पूर्वी हिस्से में दोनो तरफ किनारों पर दो कक्ष व एक बड़ा हॉल है। ऊपरी भाग में बिना कक्ष के बनी इमारत का निर्माण सबसे पहले किया गया था ऐसा प्रतीत होता है कि शत्रुओं की हलचल की स्थिति जानने के लिये रक्षकों हेतु इसका निर्माण किया गया। रूपमती मण्डल नीचे से लगभग 365 मीटर की गहराई में स्थित निमाड़ मैदान दिखाई देता हैं। माण्डू के अन्य स्मारक उस काल की स्थापत्य कला को दर्शाते हैं। यहां देश–विदेश से पर्यटक काफी संख्या में आते हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि माण्डू प्राकृतिक सौदर्य से परिपूर्ण मध्यकालीन धरोहर हैं तथा यहाँ के स्मारकों में तात्कालीन समय की स्थापत्य कला की अमीट छाप देखने को मिलती हैं। यह साहित्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया हैं।

सदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. मध्यकातीन भारत खण्ड–2, हरिशचंद्र वर्मा (सम्पादक) पृ.206–207.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

[2]. भारत के देशी राज्य: सुखसम्पत्तिराय भंडारी पृ.175–177.
[3]. इंटरनेट: https:/hi.m.wikipedia.org> wiki>मधू।
[4]. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य, लोकतात्विक अध्ययन: डॉ. सत्येन्द्र, प्र.96–102.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.